इंग्लिश कला - व्यक्ति चत्रों का अंकन तथा प्राकृतिक श्य चत्रण की परंपरा

इंग्लिश कला का वकास यूरोपीय कला की मुख्य धाराओं से जुड़ा रहा, कन्तु इसमें व शष्ट राष्ट्रीय वशेषताएँ भी वक सत हुईं। वशेष रूप से 18वीं और 19वीं शताब्दी में इंग्लैंड की कला ने अपनी स्वतंत्र पहचान स्था पत की, जहाँ सामाजिक यथार्थ, नैतिक चंतन और प्रकृति की भावनात्मक अ भव्यक्ति को चत्रों में समाहित कया गया। इंग्लिश कला का प्रमुख केंद्र लंदन था, जहाँ Royal Academy of Arts की स्थापना (1768) ने चत्रकारों के लए एक सशक्त मंच प्रदान कया।

इंग्लिश कला में दो मुख्य प्रवृ त्तयाँ उभरीं – **Portraiture** (चत्रांकन) और **Landscape Painting** (प्राकृतिक श्यों की चत्रण कला)। इन दोनों वधाओं ने ब्रिटिश समाज की सौंदर्य ष्टि, सांस्कृतिक मूल्यों और मानव प्रकृति के प्रति ष्टिकोण को प्रभावशाली ढंग से व्यक्त कया।

Portraiture in English Art: व्यक्ति चत्रांकन की परंपरा
व्यक्ति चत्रांकन (Portraiture) इंग्लैंड की कला परंपरा में एक महत्वपूर्ण वधा रही है। इसका उद्देश्य केवल व्यक्ति का श्य चत्रण नहीं बल्कि उसके सामाजिक स्थान, व्यक्तित्व और चरित्र को रेखां कत करना रहा है।

17वीं शताब्दी में Sir Anthony van Dyck (1599–1641) ने इंग्लैंड में चत्रांकन की एक नई गरिमा स्था पत की। यद्य प वह मूलतः फ्ले मश कलाकार थे, कन्तु इंग्लैंड में आकर उन्होंने राजा Charles I और उनके दरबारियों के भव्य चत्र बनाए। उनके चत्रों में राजसी गरिमा, वस्त्रों का सूक्ष्म ववरण, और नायकत्व की भावना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। उनका प्र सद्ध चत्र *"Charles I at the Hunt"* में राजा को घोड़े के पास खड़े हुए दर्शाया गया है, जो अ धकार, वलास और संयम की त्रयी को अ भव्यक्त करता है।

18वीं शताब्दी में Sir Joshua Reynolds (1723–1792) ने Portrait painting को शास्त्रीय ष्टिकोण से जोड़ा। वे Royal Academy के प्रथम अध्यक्ष बने और उन्होंने कला में "Grand Manner" की संकल्पना को बढ़ावा दिया। उनके चत्रों में भावनात्मक गहराई और आदर्शवाद की प्रधानता रही, जैसे क *"Lady Sarah Bunbury Sacrificing to the Graces"* जहाँ सौंदर्य और नैतिकता को प्रतीकात्मक रूप से चत्रित कया गया।

इसी समय Thomas Gainsborough (1727–1788) ने चत्रांकन को अ धक स्वाभा वक और सौम्य रूप प्रदान कया। वे प्रकृति के प्रेमी थे और अपने Portraits में अक्सर प्राकृतिक पृष्ठभू मयाँ भी शा मल करते थे, जैसे उनके प्र सद्ध चत्र *"The Blue Boy"* में एक कशोर को समृद्ध वेशभूषा में, प्राकृतिक परि श्य के साथ दर्शाया गया है।

19वीं शताब्दी में Portrait painting सामाजिक यथार्थ और मनोवैज्ञानिक गहराई की ओर अग्रसर हुई। Victorian युग में कलाकारों ने मध्यम वर्गीय समाज और उनके मूल्यों को उकेरने वाले चित्र बनाए। इस काल के चित्रों में केवल व्यक्तित्व नहीं बल्कि सामाजिक वातावरण भी महत्वपूर्ण बन गया।

Landscape Painting in English Art: प्राकृतिक दृश्य चित्रण की परंपरा

Landscape painting या प्राकृतिक दृश्य चित्रण की परंपरा इंग्लैंड में विशेष रूप से विकसित हुई, जिसमें प्रकृति के सौंदर्य, परिवर्तनशीलता और भावनात्मक प्रभाव को विशेष महत्व दिया गया। यह शैली कलाकारों द्वारा Industrial Revolution और शहरीकरण के प्रभावों के विरुद्ध एक आत्मिक आश्रय के रूप में उभरी।

18वीं शताब्दी में Richard Wilson (1714–1782) को इंग्लिश प्राकृतिक दृश्य चित्रण का जनक माना जाता है। उन्होंने इटली में रहकर क्लासिकल लैंडस्केप से प्रेरणा ली और उसे अंग्रेज़ी प्रकृति से जोड़ा। उनके चित्रों में संतुलन, विस्तार और सौम्यता का सुंदर समन्वय मिलता है।

19वीं शताब्दी की शुरुआत में John Constable (1776–1837) ने लैंडस्केप को यथार्थवाद की ओर मोड़ा। उन्होंने Suffolk की ग्रामीण प्रकृति को सरल किन्तु प्रभावशाली ढंग से चित्रित किया। उनका प्रसिद्ध चित्र *"The Hay Wain"* (1821) में एक किसान की गाड़ी नदी पार करते हुए दिखाई गई है। इस चित्र में ग्रामीण जीवन, हरियाली, जल, आकाश और प्रकाश की स्थिति को अत्यंत सजीवता से प्रस्तुत किया गया है।

इसी काल में J.M.W. Turner (1775–1851) ने लैंडस्केप चित्रण को अभिव्यक्तिवाद और रोमान्टिक कल्पना के स्तर तक पहुँचाया। वे प्रकाश, गति और वातावरण के चित्रकार थे। उनका चित्र *"The Fighting Temeraire"* (1839) एक युद्धपोत के अंतिम सफर को दर्शाता है, जो अतीत की वीरता और वर्तमान की प्रगति के बीच द्वंद्व को दर्शाता है। Turner की शैली में अमूर्तता, लयात्मकता और भावनात्मक तीव्रता अद्वितीय रही।

टर्नर (Turner) और कांस्टेबल (Constable) के चित्रों ने इंग्लिश प्राकृतिक दृश्य चित्रण को अंतरराष्ट्रीय कला पटल पर प्रसिद्ध दिलाई और आगे चलकर French Impressionism को भी प्रभावित किया। इंग्लिश कला, विशेष रूप से Portraiture और Landscape Painting, केवल सौंदर्य की अभिव्यक्ति नहीं थी, बल्कि यह सामाजिक संरचना, मानवीय संवेदनाओं और प्रकृति के साथ संवाद की एक विधा भी रही। Van Dyck से लेकर Turner तक, कलाकारों ने मानव आत्मा और प्रकृति के बीच एक सेतु निर्मित किया।